समर्पण

उन व्यक्तियों को जिन्होंने
विदेश में रहकर भी
स्वदेश को जिंदा रखा...

SWEDEN

वाशी

युगप्रधान आचार्यसम प.पू. पं. श्री चंद्रशेखर म. सा.

॥ अर्हं नमः ॥

Prologue

Where you live is not important,

How you live is important...

एक युवक ..

जन्मा था India में, पर भाग्य ले गया Sweden... !

Slopping Stones बहुत मिले, वैसा वातावरण भी था, पर धर्म की निष्ठा और उसकी अंदरूनी धार्मिकता ने उसे विदेश में भी स्वदेशी बनाया।

यह एक कथा ही नहीं, बल्कि सभी बिन निवासी भारतीयों के लिए एक आदर्श है ..

इस युवक के पदचिह्नो पर आप भी आगे बढे

ऐसी आंतरिक चाहना ....

युगप्रधान आचार्यसम प.पू. पं. श्री चंद्रशेखर म. सा. के शिष्य
मु. गुणहंस वि.

खास सूचना :

यदि आपको उचित लगे, तो जरूर इस युवक के लिए एक छोटा भी GREETINGS का मेसेज जरूर प्राप्ति स्थान के नंबरो पर भेजे। हम जरूर आपकी भावनाओ को दीपेशभाई तक पहुँचाने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

1 बालक तो खुद के पूज्यो के प्रतिबिंब होते है...|

मैं बहुत छोटा था | तब इतनी समझ नहीं थी, परन्तु कहा जाता है कि " बालक देख – देखकर बहुत जल्दी सीखता है | " ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी हुआ.

मेरे पापा तब आर्थिक तनाव में थे | मेरे दादीजी राजस्थान रहती थी | हम चेन्नई रहते थे | कभी दादीजी की इच्छा हो जाती चेन्नई आने की और वे फोन करके मेरे पापा मीठालालजी को बताती |

" मीठा मुझे चेन्नई आना है ! "

उसमे, खास एक प्रॉब्लम ऐसी थी कि मेरे दादीजी का एक पैर बराबर काम नहीं करता था | उससे ज्यादा मेरे पापा को भी नस खिंच जाने के कारण एक पैर में प्रॉब्लम थी | तो भी मेरे पापा चाहे कितना भी काम क्यों न हो उन सबको छोड़कर दादीजी को चेन्नई लेकर आने के लिए राजस्थान निकल जाते |

मैं छोटा था | तब मुझे प्रश्न होता " *क्यों पापा ऐसा करते है*? "

उत्तर मिलता : " माता-पिता अपने भगवान है... "

बस, तब से मेरे जीवन में संस्कार पड़े,

" कुछ भी हो जाए , माता-पिता मेरे भगवान है |

उनकी आज्ञा वह लक्ष्मण रेखा है |"

यह घटना याद करके मुझे ऐसा लगता है कि,

बालक तो खुद के पूज्यो का प्रतिबिंब होता है.../

❷ धर्म धन को खींचता है, धन-धर्म को नहीं...|

पर्युषण के दिन थे | पापा दूसरे संघ में पर्युषण की आराधना करवाने के लिए जाने की तैयारी कर रहे थे |

" हेल्लो मीठालालजी ? " किसी का फोन आया |

" हाँ बोल रहा हूँ..." पापा ने उत्तर दिया |

" मैं पैसे देने के लिए आ रहा हूँ, कब आऊ ? " दो मिनट तक पापा ने फोन पर प्रत्युत्तर नहीं दिया |

पापा का FINANCE का व्यापार था | अंतिम आठ-दस सालसे फोन कर रही पार्टी के पैसे आये नहीं थे | मैं पापा को देख रहा था |

पापा ने कुछ सोचा और कहा, " अभी हमारा धर्मोत्सव पर्युषण चल रहा है | इसलिए आठ-दस दिन के बाद आ सकते हो... " कहकर पापा ने फोन कट कर दिया |

मुझे एकदम अजीब लगा | " *इतने सालों से पैसे बाकी है, तो पापा क्यों मना कर रहे है*? " मन में विचार स्फुरित हुआ |

" दीपेश ! एक बात याद रखना | हमेशा धर्म को पहले महत्व देना | फिर धन-व्यापार को, क्योंकि पैसे तो बाद में भी कमा सकते है, परन्तु पुण्य के अवसर तो बहुत ही कम होते है, इसलिए धर्म को साध लेना चाहिए...." यह प्रंसग देखकर मेरे मन में एक बात दृढ़ हो गई... कि

धर्म धन को खिंचता है, धन धर्म को नहीं...|

❸ जो वस्तु अच्छी लगे वह ही करना ये जड़ता है, जो वस्तु हितकारी हो वह ही करना ये सुज्ञता है...|

" चल दीपेश ! साध्वीजी भगवंत पधारे है | व्याख्यान में चल, " मुझे व्याख्यान (प्रवचन) में जाने की रूचि बिलकुल नहीं थी | छुट्टी थी इसलिए मैं और मेरा छोटा भाई खेल रहे थे |

पापा ने आकर मुझे व्याख्यान में चलने को कहा, परन्तु मेरे उम्र के बालक वहाँ कोई आते नहीं थे |

' *पापा मेरे अच्छे के लिए कह रहे है?* ' मैंने सोचा...

" हाँ मैं आता हूँ, " मैंने उत्तर दिया | छोटा भाई भी मेरे साथ आने के लिए तैयार हो गया | हम दोनों पापा के साथ व्याख्यान में गए | ऐसा बहुत बार होता !

व्याख्यान में हम हमेशा आगे ही बैठते | साध्वीजी भगवंत शराब त्याग, नॉनवेज त्याग, सदाचार, प्रभु की आज्ञा आदि TOPICS पर व्याख्यान देते | मेरे दिमाग में ये सब बातें एकदम FIT बैठ जाती, फिर व्याख्यान में जाने का थोडा आनंद आता | साध्वीजी भगवंत भी छोटी उम्र के हम दोनों को देख कर खुश होते... हमे आशीर्वाद देते |

उससे भी विशेष बात ये कि साध्वीजी भगवंत के उन वचनो के संस्कार हमारे ह्रदय पर अंकित होते गए | इसलिए ही कैसी भी परिस्थिति में जैनत्व के सिद्धांत से चलित न होने का निर्णय मन में दृढ़ हुआ | निर्णय के कारण लाभ भी हुए |

ऐसे अनेक अनुभव के बाद आज ऐसा लगता है कि,

जो वस्तु अच्छी लगे वह ही करना ये जड़ता है, जो वस्तु हितकारी हो वह ही करना ये सुज्ञता है.../

4 इच्छाएँ अमाप होती है, परन्तु उसे पूर्ण करने का माप होता है...|

" मुझे PIANO चाहिए ही है | Piano के बिना मुझे नहीं चलेगा, " मैं जिद्द पकड़कर बैठ गया | मैं कभी भी जिद्द नहीं करता था, क्योंकि हमारी आर्थिक परिस्थिति से मैं परिचित था |

परन्तु आज मुझे piano लाने की धून चढ़ी |

" क्या काम है piano लाने का ? " पापा ने मुझे पूछा |

" यह सब मुझे पता नहीं, मुझे piano चाहिए | "

" दीपेश ! तु तो अच्छा लड़का है ना ? तु क्यों ऐसी जिद्द कर रहा है ? "

" देखो पापा मैंने आज तक मेरी बहुत इच्छाएँ होते हुए भी मन का समाधान किया है | परन्तु आज तो मुझे piano चाहिए ही है | मैं दूसरा कुछ भी आपके पास नहीं मांग रहा, प्लीज ! " मैंने अंतिम दाव फेंका |

" कुछ नहीं चल ! " थोड़े नाराज होकर पापा ने हाँ कर दी |

पापा मुझे म्यूजिक स्टोर में लेकर गये | और 2000 का piano पापा ने मुझे दिलवाया | मैं बहुत खुश हो गया | आज भी piano वह ही है | जब भी मैं उसे देखता हूँ, मेरे मन में एक ही विचार आता है,

इच्छाएँ अमाप होती है, परन्तु उसे पूर्ण करने का माप होता है.../

5 माता-पिता द्वारा लाइ हुई वस्तुओ से तो जानवर भी पेट भरते है, परन्तु मैं तो मनुष्य हूँ...|

मैं कंप्यूटर को रिपेयर कर रहा था | आज मैं बहुत खुश था, क्योंकि मुझे आज सिर्फ 14 साल की उम्र में मेरी पहली कमाई रु.125/- मिलने वाली थी |

पापा मुझे हर समय पॉकेट मनी देते थे | परन्तु अब पॉकेटमनी लेना मुझे अच्छा नहीं लगता था और थोड़े दिन पहले ही मैंने पापा को कह दिया था कि,

" पापा ! मुझे पॉकेटमनी मत देना | "

" क्यों दीपेश ? " पापा ने मुझे देखते हुए पूछा था |

" क्योंकि मुझे मेरे पैर पर खड़े होकर खुद का खर्चा खुद निभा सकुं ऐसी ताकत ख़ड़ी करनी है और उसकी तालीम रूप में मैं अभी कंप्यूटर रिपेयर करने वाला हूँ |

चलेंगा ना ? " पापा को मैंने पूछा था |

पापा एकदम खुश हो गए थे |

" तु बहुत आगे बढ़ और सफल-संतोषी मनुष्य बन... "

पापा ने आशीर्वचन दिये थे |

बस ये आशीर्वचन का साक्षात्कार आज होने वाला था | तब मेरे मन में एक ही विचार घूम रहा था...

माता-पिता द्वारा लाइ हुई वस्तुओ से तो जानवर भी पेट भरते है,

परन्तु मैं तो मनुष्य हूँ.../

6 दुनिया में व्यक्ति की कींमत पैसे से होती है, पात्रता से नहीं...|

" पापा ! मेरा विकास, मेरी पढाई इस मामूली स्कूल में नहीं हो सकती... "

स्कूल बदलने के लिए मैंने पापा को 10 वी क्लास के बाद force किया |

जिस स्कूल में मैं पढता था वो एकदम local स्कूल थी, जहां की पढ़ाई भी उसके इमारत जैसे ही थी |

" दूसरी स्कूल में एडमिशन लेने के लिए Donation देना पड़ता था, जो अनीति होने से मेरे दिमाग में कम बैठता है, तो भी तेरे carrier का प्रश्न है, इसलिए ही मैं कोशिश करता हूँ | " कहकर पापा ने किसी को फोन किया |

फोन पूर्ण हुआ फिर पापा ने मुझे कहा, " तेरा काम हो जाएगा | "

दूसरे दिन छुट्टी होने के कारण मैं पापा के साथ Office पर गया |

लगभग दोपहर को किसी का फोन आया |

पापा के मुँह के थोड़े भाव बदले, पापा ने फोन रख दिया |

" किसका फोन था पापा ? " मैंने पापा को मेरी जिज्ञासा व्यक्त की |

" तेरा एडमिशन कराने वाले पॉलिटिशियन का फोन था | वो तुझे और मुझे मिलना चाहते है | "

इतना कहकर पापा खुद की जगह पर जाकर पैसे गिनने लगे |

“ सर ! आ रहे है... ” पॉलिटिशियन के पी. ए. ने आकर कहा |

पापा खड़े हुए और उन्होने पॉलिटिशियन का स्वागत किया |

पॉलिटिशियन आकर बैठे |

“ मीठा भाई ! व्यापार कैसा चल रहा है ? ” नेता ने पूछा |

“ चल रहा है... फाइनेंस है... ” पॉलिटिशियन हँसे |

“ इसका एडमिशन हो गया है, इसलिए दूसरी कोई चिंता करना मत...”

नेता ने कहा |

“ Thank you सर ! ” पापा ने रु. 25000 नेता के सामने रखे |

नेता के पी. ए. ने पैसे गिन लिए | नेता खड़े हुए |

“ भविष्य में मेरा कुछ भी काम पड़े. तो याद करना मीठाभाई ! ” जाते-जाते नेता ने कहा | उस दिन मुझे पता चला कि,

दुनिया में व्यक्ति की कीमत पैसे से होती है,

पात्रता से नहीं.../

7 *सुखार्थी च त्यजेद्विद्या, विद्यार्थी च त्यजेत्सुखम्।*
सुखार्थिनः कुतो विद्या ? विद्यार्थीनः कुतः सुखम् ? ॥

" दीपेश चल ना ! थोडा घूमकर आते है ! ये नई जगह जोरदार खुली है... " मेरे फ्रेंड ने मुझे कहा | मैंने दो मिनट सोचा |

" नहीं मैं नहीं आऊंगा, मुझे पढना है और घुमने का मुझे शौक भी नहीं है | "

अच्छे परसंटेज लाकर बिना पैसे के डोनेशन से कॉलेज में एडमिशन प्राप्त करने की भावना से मैंने मना किया |

" तु बहुत पढकर बड़ा सेठ-पंडित होने वाला है... " सब मित्र हंसकर वहाँ से चले गए | थोड़े दिन पढने में ही व्यतीत हो गए |

" दीपेश चल हम बहार घूमकर आते है..." मम्मी ने कहा |

" नहीं मम्मी ! मुझे पढना है | Exam पास में है | मुझे बहार फिरने नहीं आना..." मैंने मम्मी को प्रत्युत्तर दिया | मम्मी को ख़ुशी और ग़म दोनों हुआ | ये ही सिलसिला कॉलेज में भी चालु रहा |

" दीपेश ! आ रहा है मुझे घुमाने ? " एक लड़की ने मेरे साथ Affair स्टार्ट करने के लिए कहा " सॉरी ! मैं मेरी पढाई में busy हूँ | अभी मेरे पास टाइम पास करने का time नहीं है | " मैंने मुँह पर कह दिया |

उस लड़की ने उठते हुए कहा, " तु कितना बोरिंग है..." मैंने यह बात निगल दी, क्योंकि मेरे दिल में संस्कृत का एक सूत्र भावार्थ रूप में एकदम गहराई से बैठ गया था |

सुखार्थी च त्यजेद्विद्या, विद्यार्थी च त्यजेत्सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या ? विद्यार्थीनः कुतः सुखम् ? ॥

पुत्र वो नहीं कहा जाता कि

8 **जिसकी चिंता माता-पिता को करनी पड़े,**

पुत्र वो कहा जाता है कि जो माता-पिता की चिंता करे...|

मेरा M.N.M. कॉलेज में एडमिशन हो गया | मैंने CS (computer science) की field सिलेक्ट की थी |

मैं कॉलेज में जाने की तैयारी कर रहा था | पापा पलंग पर बैठकर बुक पढ़ रहे थे | आज पापा थोड़े अपसेट हो वैसे लग रहे थे | मैंने कॉलेज जाने के पहले पापा से आशीर्वाद लिए |

" क्यों पापा ! आज टेंशन में लग रहे हो ?" मैंने सहजता से पूछा |

" नहीं, ऐसा कुछ नहीं है..." पापा ने बात उड़ाने का प्रयास किया |

" नहीं आपको बोलना ही होगा पापा ! "

" नहीं, दूसरा कुछ नहीं | बस एक ही बात है कि, तु अब कॉलेज में आया है और कॉलेज जगह ऐसी है कि जहां व्यक्ति लगभग लड़कियों में डूब जाता है | तेरा कुछ अफेर हो तो पहले से कह देना, हमे धक्का लगे ऐसा कुछ भी करना मत, बाकी मुझे तो तुझे कॉलेज भेजने की इच्छा बहुत कम भी थी... " पापा ने मेरी तरफ देखा |

मैं खड़ा हो गया |

" पापा ! मैं आपको प्रॉमिस करता हूँ | आपका मस्तक नीचे हो, ऐसा एक भी काम मैं नहीं करूँगा | I Promise you..."

पापा को शांति हुई | प्रॉमिस देते समय मेरे मन में एक ही बात घुम रही थी,

पुत्र वो नहीं कहा जाता कि जिसकी चिंता माता-पिता को करनी पड़े, पुत्र वो कहा जाता है कि जो माता-पिता की चिंता करे.../

9 थोड़े कार्य " मुझे क्या मिलेगा ? " इस अपेक्षा के बिना करना सीखो, क्योंकि इससे जो मिलता है वो अवर्णनीय होता है...|

" सर ! मैं आपके under में काम कर सकता हूँ ? प्रोजेक्ट कर सकता हूँ ? मुझे ज्ञान प्राप्त करना है... " मैंने M.N.M. कॉलेज के हमारे प्रोफेसर को 3rd year में पूछा |

" हाँ ! कर सकते हो, परन्तु..." सर दुविधा में पड़ गए |

" सर मुझे पैसे से निस्बत नहीं है, मुझे सिर्फ सीखना है | प्रेक्टिकल knowledge लेना है..."

मैंने सर की उलझन को दूर करते हुए कहा |

" OK, दीपेश ! तुम मेरे साथ काम कर सकते हो... " खुश होकर सर ने कहा | उसके बाद मेरा काम चालु हुआ | उसमे मुझे थीसीस कैसे लिखना, प्रेक्टिकल में किस तरह कंप्यूटर एप्लीकेशन वापरने में आते है, ऐसी बहुत सब वस्तुएँ जानने मिली |

इसके फल स्वरूप मैंने Master's करने के लिए मेरे प्रोजेक्ट्स तैयार करके अमेरिका और जर्मनी की University में भेजे |

मेरे प्रोजेक्ट्स को देखकर मुझे फोन आया, " मास्टर दीपेश ! तुम तुम्हारे प्रोजेक्ट को present करने के लिए अमेरिका-जर्मनी आ सकते हो ? हमे तुम्हारा प्रोजेक्ट अच्छा लगा है | "

मैं बहुत खुश हुआ | अब मुझे पैसे कमाने की अच्छी Opportunities मास्टर्स के हिसाब से मिल सके ऐसी थी | मुझे मेरे दो वर्षो की प्रोफेसर के साथ की हुई मेहनत सफल लगी | मुझे एक विचार उसमे से स्फुरित हुआ |

थोड़े कार्य " मुझे क्या मिलेगा ? " इस अपेक्षा के बिना करना सीखो, क्योंकि इससे जो मिलता है वो अवर्णनीय होता है...|

Infosys में मेरी प्लेसमेंट हुई थी | ये जॉब चालु करने के पहले मुझे अमेरिका और जर्मनी में प्रोजेक्ट बताने जाना था | पैसे मेरे पास इतने थे नहीं |

" पापा ! afford होगा ? " विदेश पढने जाने की भावना से मैंने पूछा |

" हाँ ! तु इसका टेंशन छोड़ दे, परन्तु तेरे visa-passport के लिए तो अप्लाई कर | अमेरिका और जर्मनी का visa मिलना बहुत कठिन है | अमेरिका का मिल गया तो अपना आगे का काम easy हो जाएगा | "

" मैं पापा की सकारात्मकता सुनकर खुश हो गया और visa के काम में लग गया | अमेरिका का visa आसानी से मिल गया | अब सिफ जर्मनी का प्राप्त करना था | मैं मेरे पेपर्स ready करके जर्मनी visa ऑफिस पहुंचा | वहाँ एक 50-60 वर्ष के उम्र वाले गंभीर, अनुभवी ऑफिसर पूछताछ करने के लिए बैठे हुए थे | मैंने पेपर्स बताए, सामने बैठे ऑफिसर ने शांति से चेक किए |

" मास्टर दीपेश ! आप जर्मनी जाने के लिए फीट नहीं हो, क्योंकी आपके बहुत सारे पेपर्स missing है | " 2 मिनट के बाद ऑफिसर बोले | मेरा मन गिर गया, मेहनत पानी में जाती हुई नजर आई |

" परन्तु ..." मेरे मन में कुछ आशा जगी ये शब्द सुनकर |

" मैं तुम्हारी Sincerity और व्यवहार को देखकर और एक चांस देता हूँ, criteria के अनुसार तो एकबार कोई व्यक्ति यहाँ आये और ना हो तो उसे चांस

मिलता नहीं, तो भी आप अपने पेपर्स बराबर करके लाइए | मैं आपको पास कर दूंगा, " उस ऑफिसर की kindness मेरे दिल को स्पर्श कर गई |

" Thank you sir, आपके गाईडंस के लिए, " कहकर मैं खड़ा हुआ |

थोड़े दिनों में सब सुव्यवस्थित कर पेपर्स तैयार करके मैं वापस वहाँ पहुँचा | इस समय वहाँ clearance ऑफिसर के तौर कोई महिला बैठी हुई थी | " *वापस से मुझे सब बताना पड़ेगा |* " मेरा मन थोडा खटका |

' जब तक कार्य पूरा न हो तब तक मेहनत छोड़ना नहीं.../ '

मेरे पापा-दादा का सूत्र मुझे याद आ गया |

" हेल्लो मैडम ! मुझे जर्मनी visa के लिए clearance चाहिए है | "

मैडम ने मेरे सामने देखा |

" क्या कारण है वहाँ जाने का ? " मैडम ने पूछा |

मैंने मेरे जाने का कारण बताया | उस समय के दौरान वो मैडम मेरा बनाया हुआ प्रोजेक्ट देख रही थी |

" मास्टर दीपेश ! मेरा बेटा तेरी field में ही है | मैं तेरे इस प्रोजेक्ट की फोटो कोपी निकाल सकती हूँ ? " मेरा बोलना पूर्ण होने के बाद मैडम ने पूछा | इस अवसर पर ऐसी बात करने का मुझे आश्चर्य हुआ |

" हाँ मैडम ! कोई issue नहीं है " मैंने कहाँ | मैडम खुश हो गई | उन्होने मेरे पेपर्स बिना देखे ही visa दे दिया | तब मुझे स्पष्ट एक वस्तु का अनुभव हुआ |

सफलता पुण्य और पुरुषार्थ का फल है.../

11 यदि अरमान में जान हो, तो कोई भी अरमान महान नहीं...|

पचासवी बार मैंने स्कॉलरशिप के लिए अप्लाई किया | अंतिम तीन साल से मैं 50 बार अप्लाई कर चुका था, परन्तु परिणाम शून्य आया |

Portugal, France, Sweden इन तीन देशो में पढने का खर्चा 25 लाख जितना होने वाला था | पापा ने तैयारी तो बताई थी, परन्तु मुझे यह बोझ पापा पर डालने की थोड़ी भी इच्छा नहीं थी |

इसलिए मैंने इतनी बार try किया |

इन्फ़ोसिस में मेरी 3 साल की इनकम रु. 25 लाख हो, ऐसी शक्यता नहीं थी |

" *इस समय तो पार लगा देना,* " मैंने भगवान को प्रार्थना की | थोड़े दिनों के बाद रिजल्ट आया | मैं तीसरा था | पहले दो लोगो को ही स्कॉलरशिप मिलती थी, मैं हार गया |

" *क्यों प्रभु इतनी मेहनत के बाद* ? " मैंने आशा छोड़ दी मास्टर्स करने की | थोड़े दिन के बाद मुझे स्कॉलरशिप देनेवाले इंस्टिट्यूट में से फोन आया | " हेल्लो मास्टर दीपेश ! आप सिलेक्ट हो गए हो | " मुझे लगा कि फोन पर मजाक चल रहा है |

" कैसे ? मैं तो 3rd आया था ना ? " मैंने सामने से पूछा | " हाँ ! परन्तु आपका luck समझो या जो समझो जो लड़की 2nd आई हुई थी, उसने अप्लाई नहीं किया और अप्लाई करने का time पूरा हो गया है | इसलिए हमारे rule के हिसाब से हम आगे के candidate को चांस देते है | इसलिए आप 3rd होने से आपका नंबर लगा | " मेरे कान को एकदम सुमधुर लगते आवाज में बात करनेवाले ने कहाँ |

मैं आनंद से नाच उठा | आखिर मेरी मेहनत फल गई थी | तब उस आनंद के बीच मेरे मन में एक ही पंक्ति आकार ले रही थी |

यदि अरमान में जान हो, तो कोई भी अरमान महान नहीं...|

❶❷ *संगत कोइले को भी कोहिनूर बनाती है...|*

" तुम कहाँ के हों ? " मैंने एक लड़के को पूछा |

" Nigeria का | "

हम 5 लड़के Portugal में मास्टर्स कोर्स में रूम शेयर करके रह रहे थे | वहाँ सब लोग खुद-खुद की पढाई में ही रहते थे और जब टाईम मिलता तब ऐसी बातें करते |

" मैं जैन हूँ | हमारे धर्म में नॉन वेज नहीं खाते, " मैं उस नाइजेरियन लड़के को समझाने लगा |

फिर ओली का पर्व आया | इसलिए मैं वहाँ उबली वस्तुएँ खाने लगा और थाली धोकर पीने लगा | ये देखकर उस नाइजेरियन लड़के को बहुत आश्चर्य हुआ | जैन धर्म के प्रति सद्भाव जगा |

" मैं तुझे promise करता हूँ कि जब तक हम साथ है, तब तक मैं नॉन वेज खाऊंगा नहीं और तेरी तरह फ़ूड थोडा भी वेस्ट नहीं हो इसलिए, थाली धोकर पीने का ध्यान रखुँगा | " उस नाइजेरियन ने जैन धर्म में प्रवेश करते हुए कहा | एक व्यक्ति को आचार से जैन बनाने का और नॉन-वेज छुडाने का मुझे आनंद हुआ | तब एक वस्तु मुझे स्पष्ट प्रतीत हुई,

संगत कोइले को भी कोहिनूर बनाती है...|

" हेल्लो दीपेश ! sorry मैं चाबी लेने लेट पहुँचा, इसलिए मकान मालिक निकल गये | " मैं फोन पर ख़राब समाचार सुन रहा था |

1 ½ वर्ष भारत से बहार आकर मुझे हो गए थे | मैं आज स्वीडन में मास्टर्स डिग्री का कोर्स कम्पलीट करके France जा रहा था | वहाँ मुझे 6 महीने की इंटर्नशिप करनी थी | मैंने ऑनलाइन में France में रहने के लिए किराए पर एक रूम बुक करवाई थी |

आज 25th दिसम्बर थी | आज क्रिसमस के हिसाब से यूरोप में सब लोग बहुत busy होते है | ऐसे भी युरोप में time का अत्यंत महत्व था ही |

मैं जब वहाँ पहुँचने वाला था, उसके थोड़े दिन पहले मकान मालिक का फोन आया था कि, " मैं एक week के लिए बहार जाने वाला हूँ | इसलिए 25 तारीख को दिए गए समय के पहले चाबी कलेक्ट कर लेना | " मैंने मेरे मित्र को time दे दिया था चाबी कलेक्ट करने का | परन्तु वह पांच मिनट लेट पहुँचा था और मालिक निकल गया था |

मैं खुद के दुर्भाग्य को कोसता कोसता ट्रेन में बैठा रहा | मैंने मेरा मोबाइल चेक किया | उसमे भी इन्टरनेट पूरा हो गया था | सब आपत्ति एक साथ आ गई थी | *" दीपेश ! टेंशन मत कर | कर्म पर विश्वास रख,"* अन्दर से कोई बोला | 5 मिनट तक आगे क्या करना ये ही मैं सोचते रहा |

" मेडम ! " मेरे बाजू में बैठे हुए एक France महिला को मैंने कहा | उसने मेरे सामने देखा |

" मैं आपका फोन use कर सकता हूँ, प्लीज ? " यूरोप के लोगो की यह खासियत होती है कि उन्हें यदि आप रिस्पेक्ट दो, तो वे खुद की जान भी आपके

लिए दे दे | मेरे प्लीज शब्द को सुनकर उस मेडम ने मुझे फोन दे दिया |

मैंने NET पर देखकर एक France में रहने वाले इंडियन के ग्रुप में मेसेज किया |

" मैं HOMELESS हूँ | किसी के पास vacancy हो तो पेमेंट के साथ में रहने के लिए तैयार हूँ | "

थोड़े समय तक कोई भी रिप्लाई आया नहीं | फिर मोबाइल में एक फ़्लैश दिखा | एक व्यक्ति का मेसेज आया |

" मेरा रूम खाली है, आप ख़ुशी से रह सकते है | "

मैंने उसका एड्रेस नोट कर लिया और मैं वहाँ 7 दिन का सामान लेकर पहुँच गया | मेरे दादा-पापा ने एक वस्तु मुझे खास सिखाई थी कि आप जहां जाओ वहाँ किसी पर बोझ मत बनना, बल्कि उन्हें मदद करना |

वहाँ रहने वाला व्यक्ति अच्छा निकला | वह मेरे साथ एकदम फ्रेंडली था | एक-दो दिन जाते मुझे पता चला कि उस व्यक्ति का खुद का C.V. बराबर न होने के कारण उसे जॉब नहीं मिल रही थी | मैंने उसे C.V. बराबर करके दिया | वह मुझसे बहुत खुश हुआ |

मेरा मकान मालिक 7 दिन के बाद आ गया था | उसका फोन आते ही मैंने मेरा समान इकट्ठा करना शुरू किया | मैं तैयार होकर मुझे रूम देने वाले को thank you कहने गया |

" अरे ! आपने तो मेरी मदद की है | आप क्यों thank you कह रहे हो | " उसने मुझे कहा |

मैं हंसा | जब मैंने इस घर में प्रवेश किया था तब मैं thank you कह रहा था, आज जाते समय वह thank you कह रहे थे |

तब मुझे मेरे पापा के शब्द याद आए,

आप जाओ और आनंद फैले, तो आपका जाना सार्थक है.../

❶❹ Help ऐसी चीज है, जो दानव को भी मानव बना देती है, तो मानव की तो क्या बात करनी |

" अंकल ! लाओ मैं अन्दर लेकर जाऊ, आप कहाँ इतना उठाओगे... " कहकर मैंने मेरे मकान मालिक फ्रेंच वृद्ध अंकल का सामान अन्दर लिया |

काम पूर्ण होने के बाद, " Thank you Dipesh ! " उस अंकल ने कहा | उनके मुंह पर स्माइल थी |

थोड़े दिन के बाद वापस से कुछ सामान आया | मैंने अंकल को देखा | पापा के संस्कार के हिसाब से मैं नीचे गया | मैंने वापस सब सामान अन्दर लगाया |

मैं जहां फ्रेंच में रहता था उसके बाजू में चर्च था | कई बार मैं उस चर्च में कुछ देखने, कुछ पढने जाता | वहाँ नन्स (क्रिस्टियन साध्वीजी) रहती थी | निकलते समय मैं उन्हें पूछता, " मेरा कुछ काम है ? "

काम होता तो नन्स कह देती | उस हर अवसर पर मुझे टनबंध थैंक्यू मिलते | किसी की मदद करने की ख़ुशी मन में रहती |

आज उस बात को 4 ½ साल ऊपर हो गए | आज सुबह ही उस अंकल का मुझे वापस थैंक्यू कहता ई-मेल आया | ई-मेल को देखते ही एक मन में पडी हुई बात बहार स्फुरित हुई,

Help ऐसी चीज है, जो दानव को भी मानव बना देती है, तो मानव की तो क्या बात करनी...|

१५

माँ शब्द ऐसा है कि जिसका शब्दार्थ तो डिक्शनरी में मिल सकता है, परन्तु उसका भावार्थ तो हृदय की डिक्शनरी में ही मिल सकता है...|

" दीपेश ! तु इंडिया आ जा, प्लीज ! " मम्मी के साथ, मैं फ्रेंच में बैठा-बैठा बात कर रहा था | 2 साल का बड़ा मास्टर्स डिग्री का कोर्स पूर्णता के आरे था | मेरे हाथ में वर्ल्ड की Top 50 में आती यूनिवर्सिटी का सर्टिफिकेट था |

इस यूनिवर्सिटी के कारण ही मुझे स्वीडन में जॉब भी मिली थी | पगार भी तगड़ा था |

" मम्मी ! मुझे यहाँ जॉब मिल गई है, और मुझे यहाँ रहने की इच्छा भी है |" मैंने मम्मी को कह दिया |

" नहीं दीपेश ! जब तक तेरी शादी नहीं हो जाए, तब तक मैं तुझे फोरेन जाने नहीं दूंगी और ऐसे भी तु पढने के लिया वहाँ गया था | जॉब के लिए नहीं | " मम्मी खुद की बात में firm थी |

मेरे सामने करियर और मम्मी की इच्छा दों चीजे आकर ख़ड़ी थी | थोड़े समय के लिए गडमथल चली,

' इतनी अच्छी जॉब, इतना शांत वातावरण, इतने अच्छे लोग, क्या करू ? '

भारत में मुझे जॉब मिलेगी या नहीं इसकी भी शंका थी | मिलेगी तो मेरे लेवल की मिलेगी या नहीं ?... दो मिनट के बाद मैंने जवाब दिया, " मम्मी ! आपकी इच्छा है ना, तो मैं चेन्नई आ रहा हूँ | जॉब-जॉब है, आप माँ हो... माँ-माँ "

ये बोलते समय मेरे दिमाग में एक बाद एकदम clear थी,

माँ शब्द ऐसा है कि जिसका शब्दार्थ तो डिक्शनरी में मिल सकता है, परन्तु उसका भावार्थ तो हृदय की डिक्शनरी में ही मिल सकता है.../

❶❻ कार्य हो जाने के बाद उसकी निंदा करना मूर्खता है...|

मैं फोन पर आये हुए, मन को चिर डाले ऐसे समाचार सुन रहा था | हम राजस्थान में थे |

स्वीडन से वापस आने के बाद मैंने जॉब चालू करने के पहले एक महीने का रेस्ट माँगा था |

जब मैं स्वीडेन में था, तब मम्मी का फोन आने से वहाँ से ही मैंने जॉब के लिए भारत में अप्लाई कर दिया था | मुझे अच्छी बड़ी चेन्नई की कंपनी में जॉब भी मिल गई थी | परन्तु भारत आने के बाद एक महीने के बाद मैं जॉब चालु करूँगा ऐसा मैंने उन्हें बताया था |

उस एक महीने में ही मैं राजस्थान फिरने के लिए फेमिली के साथ गया था और आज एक फोन आया |

" मास्टर दीपेश ! तुम्हारी जॉब केंसल हुई है | हम दिलगीर है कि तुम्हारी जॉब केंसल करनी पड रही है | " कहकर ऑपरेटर ने फोन रख दिया |

मैंने मोबाइल में लाल बटन दबाया | इस कम्पनी ने मेरे साथ सच में धोखा किया था |

' *केस कर डालू इन लोगो पर,*' अन्दर से विद्रोही मन बोलने लगा, ' *इस तरह जॉब की डील करने के बाद और उसमे भी मैं फॉरेन की जॉब को छोड़ कर आया और फिर इस तरह केंसल कर दे, ये घोर अन्याय है |*'

विद्रोही मन उग्रता में आया | परन्तु मेरे अन्दर का शुद्धात्मा तब बोला *'दीपेश ! अब जो हो गया वो हो गया | हो जाने के बाद सयानापन कुछ काम का नहीं है, अब भविष्य का विचार मत कर और अभी तो मस्ती कर | '*

पापा-दादा के ' let go-let god ', करने के संस्कार काम आए | ऐसे भी लिखा ही, है ना...

कार्य हो जाने के बाद उसकी निंदा करना मूर्खता है...|

" हेल्लो मीठालाल सा ! हम आपके लड़के को देखने आ रहे है, " फोन आते ही पापा एकदम हक़बका गए | जिसका फोन आया था वो व्यक्ति समाज में बहुत प्रतिष्ठित थे और हमारे से पैसे-टके से ज्यादा सुखी थे |

' ये क्यों आते होंगे मेरे घर, ' पापा को विचार आया, उन्होने दूसरे भाई को फोन करके पूछा |

" मीठाभाई ! आपका लड़का इस परिवार वालों को पसंद है, इसलिए उसे देखने आने वाले है, " पापा को बहुत आश्चर्य हुआ |

दुपहर को बड़े नामचीन व्यक्तियों के साथ मुझे देखने वाले व्यक्ति आ गए | हमने उनका स्वागत किया | वो आकर बैठे | औपचारिकता पूर्ण हुई | फिर मेरा इंटरव्यू चालु हुआ |

" आप कितने पढ़े हो? "

" आप विदेश में अभ्यास करने के बाद वापस से स्वदेश में क्यों आये ? "

" आपका फ्यूचर प्लान क्या है ? "

" आप विदेश जाने की भावना रखते हो ? " जैसे अनेक प्रश्नों का भरमार हुआ | मैंने स्पष्ट और सच्चा उत्तर दिया | इंटरव्यू पूर्ण होने के बाद वे खड़े हुए और हम उन्हें बिदा करने गए |

उनके जाने के बाद पापा ने मुझे कहा, " दीपेश ! लगभग तेरी बातें उन्हें अच्छी नहीं लगी होगी | वह परिवार बहुत बड़ा है और अपने हेसियत के बाहर का है | लगभग तो " ना " ही आएगा | "

शाम को फोन आया | पापा ने उठाया | पापा के फ्रेंड का फोन था कि जो मुझे देखने के लिए आये हुए व्यक्तियों में शामिल थे |

" दीपेश ! " पापा ने आश्चर्य भाव के साथ कहा, " उन्होने हाँ कही है | " पापा के आश्चर्य के बीच एक चीज छुपी मुझे दिखी,

***भाग्य के चमकारे रंक भी राजा बना देता है*|**

❶❽ धर्म कहाँ और किस तरह काम आता है उसका गणित करना अशक्य है...|

मम्मी-पापा लड़की देखने जाने की तैयारी कर रहे थे | साथ मैं मुझे भी जाना था | मम्मी को तो अब तक Believe ही नहीं हो रहा कि हमे इस परिवार से रिश्ता आया है | मुझे भी अजीब ही लग रहा था |

" पापा ! मेरे मन में एक प्रश्न कभी का घुम रहा है, आप उसका समाधान कर सकोगे ? " पापा की तरफ देखकर मैंने पूछा | पापा ने हाँ कही |

" आपको कुछ ख्याल आया कि उस परिवार के दिमाग में मेरा स्थान आया कहाँ से ? " मेरे प्रश्न की शुरूआत मैंने की |

" हाँ ! " पापा ने कहाँ |

" कल जब मैं मेरे फ्रेंड के साथ बात कर रहा था, तब ही मुझे यह जानने मिला |"

" एक बात तो है ही कि अपने पूर्वजो की Goodwill, पैसे इतने नहीं होते हुए भी बहुत बड़ी है | साथ-साथ में घर की धार्मिकता को भी वे जानते है | इसलिए कोई भी व्यक्ति को ऐसी इच्छा तो होती ही है कि खानदान-धार्मिक घर में मेरी बेटी जाए |

उससे भी ज्यादा विशेष बात ये हुई कि back ground निकालने के लिए परिवारवालों ने यहाँ बसते अपने स्थानक के अग्रणीओ को फोन किया | फोन पर उन अग्रणीओं ने कहा,

" लड़का बहुत होशियार है, इतना ही नहीं साध्वीजी भी व्याख्यान में इस लड़के की अनुमोदना कर रहे थे | वो चारो-चार महीने साध्वीजीओं के साथ गौचरी के लिए घर बताने गया था | " तूने की हुई साध्वीजीओ की वैयावच्च की प्रशंसा इस परिवार वालों ने सुनी और इसलिए तेरे गुण-ज्ञान को देखकर तेरे पर पसंदगी उतारी है | "

धर्म का महात्मय देखकर मैं छक्क हो गया,

धर्म कहाँ और किस तरह काम में आता है उसका गणित करना अशक्य है...|

❶❾ व्यक्ति को पहचानने के लिए उसके सबकोन्सीयस माइंड को पहचानो...|

हम लड़की वालो के घर बैठे हुए थे | लड़की थोड़ी fat थी, परन्तु बाकी सब तरह से संपन्न थी |

मेरे तरफ से पूछने के प्रश्न मैंने पूछ लिये | सबसे मेईन प्रश्न मैंने उसे एक ही पूछा कि, " इतने बड़े परिवार में रहने के बाद हमारे छोटे परिवार में तु एडजस्ट हो सकेगी ? "

उसने समाधानकारक उत्तर दिया | उसकी simplicity अच्छी थी | मेरे इंटरव्यू के बाद पापा की बारी आयी |

पापा ने उसे पहला प्रश्न किया,

" तेरा सबसे प्रिय जानवर कौनसा है ? "

" गाय और कुत्ता, " दीपिका ने उत्तर दिया |

" तेरा सबसे प्रिय पक्षी कोनसा है ? " पापा ने वापस प्रश्न पूछा | " मोर, " दीपिका ने कहा |

फिर पापा ने दूसरे-दूसरे प्रश्न पूछे | उसके भी दीपिका ने संतोषकारक प्रत्युत्तर दिए | हम पूछताछ करके घर के बहार निकले | " सोचकर उत्तर देंगे, " ऐसा कहा |

" दीपेश ! लड़की अच्छी है, खानदान बहुत अच्छा है, सोचकर कहना..."

" पापा ! ये बात तो सच्ची, परन्तु आपने वो जानवर और पक्षियों के प्रश्न क्यों पूछे ? " पापा को मैंने प्रश्न किया |

" उसके मन के विचार और स्वभाव को पढने के लिए | " पापा ने कहा |

" किस तरह ? "

" दीपेश ! जितनी भी बड़ी कम्पनीयाँ है, वे इस पद्धति का ही उपयोग जॉब Recruitment के लिए करते है | जिस व्यक्ति को जो पशु या पक्षी प्रिय होते है, उसका स्वभाव भी उसके अनुसार होता है |

दीपिका ने गाय को प्रिय प्राणी बताया है, इसलिए वह गाय की तरह सॉफ्ट और वात्सल्य वाली होगी और उसे वैसे ही गुण अच्छे लगते है |

दूसरा उसने कुत्ता कहाँ | कुत्ता वह वफादारी का सूचक है | इसलिए वह वफादार रहेगी | दूसरे के साथ अफेर रखना, तलाक देना जैसे कार्य वह नहीं करेगी और उसका प्रिय पक्षी मोर है | इसलिए वह सुन्दरता की चाहना रखनेवाली है | " पापा ने एक साथ में खुद की reading कह दी | ये एनालिसिस देखकर मुझे पापा की बुद्धि पर नाज हुआ और एक नया सूत्र मुझे मेरे जीवन के लिए मिला,

व्यक्ति को पहचानने के लिए उसके सबकोन्सीयस माइन्ड को पहचानो.../

" हेल्लो मैं मीठालाल बोल रहा हूँ | हमारी एक विनती है | लड़के को वापस एकबार लड़की को मिलने की इच्छा है | "

पापा ने खुद के ह्रदय पर सौ मण का भार रखकर दीपिका के परिवार वालो को कहा |

हुआ यह था कि बीते हुए दिनों में पापा ने मुझे बार-बार पूछा था कि, " तुझे लड़की पसंद है या नहीं ?"

परन्तु, मम्मी को दुःख न हो, इसलिए मैंने ना या हाँ कुछ भी नहीं कहा था | मैं timepass कर रहा था |

फिर एक दिन पापा ने स्पष्ट कह दिया, " दीपेश ! जो है वह कह दे | शेयर कर, हिचकिचा मत | तो ही रास्ता निकलेगा | "

फिर मैंने मेरा डिसिशन सुना दिया, "मुझे लड़की पसंद नहीं पापा ! " पापा के हाव-भाव स्थिर ही रहे थे |

" क्यों दीपश ? "

" वह थोड़ी Fat है इसलिए, " मैंने एकदम स्पष्ट कह दिया |

पापा ने थोड़े टाइम के लिए कुछ भी नहीं कहा |

" देख दीपेश ! " पापा ने मुझे समझाने का शुरू किया था, " इस दुनिया में हर व्यक्ति की कीमत उसके बहार के दिखावे से ही की जाती है | अफ़सोस यह है कि तु भी इसमें फंस गया | कुछ नहीं परन्तु एक बात समझ लेना कि जैन धर्म में बाहरी व्यक्तित्व का कोई महत्त्व नहीं है, परन्तु आन्तरिक व्यक्तित्व का है | " लम्बे समय तक पापा ने मुझे समझाया |

"OK पापा ! परन्तु मुझे वापस से एकबार मिलना है | तब मेरा मन उसके fatness में अटक गया था |" मैंने प्रस्ताव रखा |

बात सुनते ही पापा की मुख की रेखा थोड़ी तंग हुई थी | क्योंकि समाज के रिवाज के अनुसार एक ही मीटिंग होती है और उसमे निर्णय दे देना पड़ता है |

और इसलिए ही दूसरी बार फोन करते वक्त पापा uneasy महेसूस कर रहे थे |

सामने से थोड़े दिनों में सकारत्मक उत्तर आया | और 2nd मीटिंग में सगाई नक्की हो गई |

उस समय पापा ने समझाई हुई एक ही बात मन पटल पर उभरकर आ रही थी...

सुन्दरता रूप में नहीं होती, गुण में होती है.../

" दीपेश ! और उसके पापा ! समझ लो तुम्हारी जिद्द यहाँ नहीं चलेगी | " मम्मी ने सख्ताई से कहा |

मेरी शादी नक्की हो गई थी | उसकी तैयारी में सब लगे हुए थे | जैसे-जैसे दिन नजदीक आते जाते वैसे-वैसे अलग-अलग वस्तुओ पर ध्यान देना पड़ता था |

पापा और मेरी इच्छा ऐसी थी कि एकदम सिम्पल शादी हो और इसलिए ही हमने सोचा था कि शादी में सिर्फ 31 आइटम ही रखनी | ज्यादा आइटम हो तो, ज्यादा वेस्ट होता है,जो हमे बिलकुल अच्छा नहीं लगता था | हम सामने वालो को convince कर देंगे ऐसा हमे लग रहा था और इसलिए ही हमने घर में ये बात रखी |

मम्मी से लेकर सब हम पर टूट पड़े | जब लास्ट तक ज्यादा रकझक चली, तो मम्मी ने ऊपर की बात सुना दी |

" क्यों मम्मी ? " मैंने पुछा |

" अरे ! अपना समाज में कैसा दिखेगा ? पहले भी तुम दोनों की शादी की बाते सुनकर सबको आश्चर्य हो रहा है | यह देखकर जोरदार आश्चर्य होगा ? अपना नाक कटाना है, तुम दोनों को मिलकर | "

" मम्मी की बात सच है ये तुम्हारी फ़ालतू जिद्द छोड़ दो कोई भी फायदा नहीं | "

बाकी सभी ने भी साद भरा |

पापा और मैं चुप बैठ गए | पापा और मेरी 31 आइटम की इच्छा चुप हो गई | Foriegn अच्छा लगने का मुझे एक और कारण मिला | वह था भारत का झूठा समाजवाद | एक वस्तु स्पष्ट इन सब के बीच उभर आती थी |

समझ बिना का समाज बहुत नुकसान करता है.../

स्वीडन में मुझे जॉब लग गई | वैसे तो मेरी शादी में मेरे बड़े ससुरजी ने एक बात clear कर दी थी कि “ यदि लड़का भारत में रहने वाला हो, तो हम आगे बात चलाए और मम्मी की इच्छा, मैं भारत में रहूँ ऐसी ही थी | परन्तु online जॉब देखते-देखते मेरे से रहा नहीं गया और मैंने जॉब के लिए अप्लाई कर दिया था |

कंपनीवालों ने मेरा Qualification देखकर “ हाँ” कह दी थी, परन्तु मैंने कन्फर्मेशन दिया नहीं था | मुझे सबकी आज्ञा लेनी बाकी थी | *“ क्या करू ?”* मन में विचार आया और सामने पापा दिखे |

“ पापा ! एक मिनट टाइम है ? ” मैंने पूछा | “ हाँ बोल क्या काम है ? ” पापा ने पॉजीटीव प्रत्युत्तर दिया | मुझे पता था कि पापा हमेशा बात को समझते और फिर विचार कर आगे बढ़ते |

मैंने मेरी पूरी बात पापा के सामने रख दी |

“ और मम्मी या आप कहोगे उसी समय ही मैं स्वीडन छोड़कर आ जाऊंगा | ”

मेरी बात के अन्त में मैंने कहाँ | पापा ने कहाँ “ दीपेश ! मैं तेरी बात समझ सकता हूँ और दूसरी बात यह भी क्लियर है कि भारत में तु जितना पढ़ा हुआ है, उसकी वैल्यू करने वाले लोग नहीं है | परन्तु तेरे ससुर और मम्मी को समझाना पड़ेगा | मेरी तरफ से कोई मनाई नहीं है | ” पापा ने पॉजीटीव उत्तर दिया और हेल्प करने की तैयारी बताई |

पापा ने ससुर जी को फोन किया | ससुरजी ने " तुम्हारी दोनों की जिंदगी है, जैसे ज्यादा अच्छा हो वैसे करना | " कहकर खुद की indirectly ' हाँ ' दे दी |

दीपिका तो तैयार ही थी, कि जो सच में पापा के कहे अनुसार मेरे लिए एकदम योग्य और मेरी भावनाओं को समझने वाली साबित हुई थी | उसके रूप के कारण मेरे मन में आई कमी उड़ गई थी | वो अब Fat मिटकर Fit हो गई थी | Main प्रश्न अब मम्मी का था | बहुत समझाने के बावजूद माँ की ममता के कारण मम्मी मानी नहीं |

एकबार हमारे पडोसी ने मम्मी को कहा, " देखो तुम्हारा बेटा इतना पढा हुआ है, अच्छा है, तुम जब भी बुलाओगे तब आने की तैयारी बता रहा है, तो आप क्यों उसे जाने नहीं देते | उसका भविष्य वहा अच्छा है, मेरे हिसाब से तो आपको उसे जाने देना चाहिए | देखो ना वो भी इसके कारण दु:खी है | "

मम्मी को उनकी बात छू गई | मम्मी ने भी अन्त में हाँ कह दी | मैं बहुत खुश हो गया और कंप्यूटर में Enter बटन दबाकर मैंने मेरी जॉब के लिए हाँ कह दी | मैं स्वीडन उड़ने वाला था | पापा मुझे इन सब समय में देखते रहते | उनके सर में मेरे गुणों को देखकर एक ही बात का उद्भव होता |

खुद की इच्छा से फिरने वाले बहुत है,

परन्तु सब की इच्छा से करने वाले विरल है.../

❷❸ काम उपासना है, बंधन नहीं...|

कंपनी ने मेरा राजीनामा स्वीकार लिया | मैं मेरी ऑफिस में मेरा सब सामान लेने गया | लास्ट दो दिन से कंप्यूटर बंध पड़ा हुआ था | मैं मेरे सब कार्य पूरे करके ऑफिस के बाहर निकला |

जब मैं निकलने जा रहा था तब मुझे चैन नहीं पड रहा था |

'*क्यों ?*' मैंने सोचा | मेरी नजर कंप्यूटर पर गई | कोई मेरे लिए ऐसा ना कहे कि '*मैं कंप्यूटर ख़राब करके गया |* ' मन में विचार आया | कंप्यूटर तो अपने आप ही बंध हो गया था | 2 दिन पहले ही मैंने राजीनामा दे दिया था और तब तो कंप्यूटर चल रहा था |

" *आज मेरी कोई जवाबदारी नहीं थी और ऐसे भी मैं ठीक करू या नहीं पैसा...*" वहाँ मन अटक गया |

'*काम पैसे से तोला जाए ऐसी वस्तु नहीं थी | वो तो मेरी कला थी, तो क्यों न मैं मेरी कला से निकलते-निकलते भी मेरा काम न होने के बावजूद काम के प्रति की वफादारी से कंपनी को गिफ्ट देकर न जाऊं ?* ' ऐसे भाव मन में खेलने लगे |

मैंने मेरा सामान नीचे रखा और मैंने कंप्यूटर ठीक करने का शुरू किया | टाइम बहुत गया, परन्तु मैंने काम पूर्ण किया |

निकलते समय मेरे सहवर्तिओं के मुंह पर आनंद-आश्चर्य था और मेरे मुंह पर संतोष था | इन संतोष की रेखाओ में एक रेखा साफ़ नजर आ रही थी...

काम उपासना है, बंधन नहीं...|

२४ *कपडे की कींमत से कपडे को पहननेवालो की कींमत ज्यादा होती है...*|

मैं स्वीडन में गया तब मुझे विचित्र विचित्र वस्तुएँ जानने मिली | एक तो तुम घर से भी ऑफिस का काम कर सकते हो | इसलिए बहुत बार जब लेट हो जाता, तब मैं घर से ही काम करता | उन्हें काम से मतलब होता, कितने घंटे करो, कैसे करो उससे नहीं |

एकबार मैं ऑफिस में गया | वहाँ एक व्यक्ति Night Dress पहनकर आया था | मुझे अजीब सा लगा |

' क्यों ऐसे कपडे पहनते होंगे ? ऑफिस है या घर है ? ' मन में उलझने चली | इस बात को थोडा समय पसार हुआ | जैसे-जैसे स्वीडन को जानता गया, वैसे-वैसे, बहुत-बहुत गुणवत्ताएँ देखने मिली |

वहाँ Quantity से मतलब नहीं था, परन्तु Quality से था | व्यक्ति वह खुद के व्यक्तित्व से ही निख़रता | उसके कपडे-पहेरवेश से नहीं | हम उसे फ्री वातावरण कहते है, और शायद दूषण रूप भी मानते होंगे, परन्तु जब व्यक्ति को अनुकूलता मिलती है तो वह freely ज्यादा अच्छी तरह से काम कर सकता है, ये भी बात विचारणीय है |

यह देखते-देखते मुझे स्वीडन की एक वस्तु उल्लेखनीय लगी,

कपडे की कींमत से कपडे को पहननेवाले की कींमत ज्यादा होती है.../

" मैं आज ऑफिस नहीं आऊंगा सर ! मुझे आज बुखार है, " मैंने ऑफिस में फोन करके कहा | स्वीडन की खासियत ये है कि वहाँ कंपनीओ को यदि कोई व्यक्ति नहीं आने का कारण दे तो वे उसमे शक नहीं करते | इन कंपनीओ को खुद के काम करनेवालों पर सम्पूर्ण विश्वास होता है और वहाँ के काम करने वालों मैं भी प्रमाणिकता अद्भुत होती है |

" जल्दी ठीक होकर जल्दी वापस आना," कहकर बॉस ने फोन कट किया |

बुखार ज्यादा लगने से मैं online में हॉस्पिटल की खोज करने लगा | स्वीडन जैसे डेवलप्ड देश में तो हॉस्पिटल की कतार होगी ऐसी मेरी धारणा थी |

गूगल सर्च किया और मुझे बहुत आश्चर्य हुआ | पूरे स्टॉकहोम में सिर्फ एक-दो हॉस्पिटल ही थी | मुझे लगा कि गूगल ने अपडेट नहीं किया होगा या तो मेरे फोन में प्रॉब्लम होगी | मैंने वापस से सर्च किया | परिणाम same !!!

हॉस्पिटल के एड्रेस के अनुसार मैं वहाँ पहुँच गया | मैंने देखा तो जो स्वीडन गवर्नमेंट की हॉस्पिटल थी वहाँ मुझे एक भी पेशन्ट बेड पर सोया हुआ दिखा नहीं | सब डॉक्टर की राह देखते बैठे हुए थे | मैं भी वहाँ सब औपचारिकता पूर्ण करके बैठ गया |

मेरा नंबर आते मैं डॉक्टर के पास गया | डॉक्टर की मुखाकृति एकदम शांत थी | उन्हें देखकर ही आधे रोग भाग जाए ऐसा था |

" तुम्हे क्या प्रॉब्लम है ? " डॉक्टर ने एकदम मीठे आवाज से पूछा |

“ बुखार है | ” मैंने जवाब दिया |

“ जाओ घर चले जाओ, ” हाथ में एक छोटी-सी दवा देते हुए डॉक्टर ने कहा | मुझे दो मिनट तक कुछ भी समझ में नहीं आया | इसलिए मैं गूंगे की तरह बैठा रहा |

“ डॉ. ! इन्जेक्शन, ड्रीप्स कुछ भी नहीं? ” मैंने पूछा |

“ दीपेश सर ! तुम स्वीडन में नए हो | इसलिए तुम स्वीडन को जानते नहीं | पूरे स्टॉकहोम में एक गवर्नमेंट हॉस्पिटल और टोटल सिर्फ दो हॉस्पिटल क्यों है क्या यह तुम जानते नहीं हो ? ” दो मिनट के लिए डॉ. स्के |

“ सर ! स्वीडन का क्लाइमेट ही ऐसा है कि जिसमे रोगप्रतिकारक शक्ति गजब की है | बेकटेरीयल ग्रोथ को सपोर्ट करे ऐसा क्लाइमेट स्वीडेन का नहीं है | बुखार तो यहाँ बिना गोली के ही ठीक हो जाता है | सिर्फ 2-3 दिन की राह देखनी पड़ती है | तुम्हारे जैसे कोई नए आये, तो उनके संतोष के लिए ये लो-पॉवर की गोली देनी पड़ती है | ” मैंने डॉ. के कहे अनुसार गोली को देखा | उसका पॉवर लो था |

“ बहुत ज्यादा बुखार आये तो ही ये गोली लेना | तुम बाहर से आये होंगे, तो तुम्हे बाकी देशो की हॉस्पिटल की तरह पेशन्ट सोते हुए दिखाई नहीं दिए होंगे | सच में ही स्वीडन हेल्थ के लिए हेवेन है | ”

मैं थैंक्यू कहकर बाहर निकल रहा था तब ही डॉ. ने मुझे कहा,

हवा ही दवा हो, तो दवा का क्या काम है.../

❷❻

संबंधो को संभालने में मनुष्य बरबाद हो जाता है,
परन्तु बरबाद हुए व्यक्ति को
कौनसा सम्बन्ध संभालता है?

" दीपेश भाई ! तुम्हे कौनसी कंट्री अच्छी लगती है ? इंडिया ? स्वीडन ? " एक घर में मैं मेरे फ्रेंड को मिलने गया था | भारत मैं वहाँ से छुट्टी मिलते आया था |

मम्मी को भी इच्छा बहुत थी | भारत आने के बाद दीपिका और मेरा टाइम यहाँ-वहाँ आने-जाने में पूरा हो जाता था |

आज मेरे फ्रेंड के घर जाते मुझे किसी ने उपरोक्त प्रश्न पूछा था |

" सच्ची कहूँ तो दोनों | " मैंने हंसकर उत्तर दिया |

" क्यों ? "

" देखो भारत की संस्कृति, उसका जैन धर्म, उसके आचार और सबसे ज्यादा भारत मेरी मातृभूमि होने के कारण मुझे भारत प्रिय है | परन्तु , बाकी सब दृष्टि से विचार करता हूँ, तो स्वीडन अपने से बहुत आगे है |

ऐसे मत सोचना कि मैं डेवलपमेंट के नजरीये से सोच रहा हूँ, उसमे तो वह लाख गुणा आगे है ही | परन्तु उसके सिवा भी मानवता आदि गुणो की दृष्टि से भी वह

बहुत आगे है | स्वार्थवृत्ति की गींचता जिस तरह भारत में दिखती है, ऐसी स्वार्थवृत्ति वहाँ नहीं है |

यहाँ व्यक्ति को खुद का फायदा कैसे हो यही विचार होता है, वहाँ व्यक्ति से भी ज्यादा आन्तरिक सुख को महत्व दिया जाता है | फायदा जो सुख न लेकर आये, तो ये फायदा वेस्ट है ना ? " मैं थोडा रूका |

" मेरी ही बात करू तो जब मैं भारत में होता हूँ, तो मेरे पास मेरे लिए - फेमिली के लिए थोडा भी टाइम होता नहीं है | लोगों को मिलने में, लोगो के वहाँ खाना-खाने जाने में, नहीं जाओ तो उन्हें बुरा लग जाता है तो मनाने में ही मेरा सम्पूर्ण समय चला जाता है | उससे विपरीत वहाँ ऐसी अपेक्षाओं की भरपूरता लोगो में नहीं है | वहाँ शान्ति (peace) है |

वहाँ मैं सुबह-शाम मेरे खुद के लिए टाइम निकाल सकता हूँ | मैं वहाँ रोज आ. रत्नसुन्दरसूरिजी के व्याख्यान सुनता हूँ | ध्यान के लिए भी वहाँ का वातावरण यहाँ के हिमालय जैसा है, " मैं रूका...

सभी, बोल रहे मेरे मुंह को देख रहे थे | उन्हें अच्छा लगा या नहीं लगा, मुझे तो स्पष्ट लगा कि,

संबंधो को सम्भालने में मनुष्य बरबाद हो जाता है, परन्तु बरबाद हुए व्यक्ति का कौनसा संबंध संभालता है ?

" पापा ! मैं इस टाइम स्वीडन से जब भारत आऊंगा तब मुझे आ. रत्नसुन्दरसूरिजी म.सा. को मिलने जाने की इच्छा है | तो आप उसकी व्यवस्था प्लीज कर देना ना | "स्वीडन से पापा के साथ बात करते हुए मैंने कहाँ |

अनार्य देश स्वीडन में धर्म की मेरी प्राणडोरी को चलाने का बड़ा कार्य आ. रत्नसुन्दरसूरिजी के प्रवचनो ने किया था | उनको हम एकदम ध्यान से सुनते और हमे बहुत अच्छा लगता | मैं आचार्य भगवंत का fan बन गया था और इसलिए मुझे एक बार उन्हें मिलने की गहरी इच्छा हुई |

Fan को खुद के आदर्श को मिलने की इच्छा सहज ही होती है ? मैं भारत पहुँचा | थोड़े दिन सब व्यवहार सँभालने में बीत गए |

" पापा ! मैंने आपको कहा था ना ? " मैं वाक्य पूर्ण करू उसके पहले पापा बोले, " दीपेश ! मुझे पता है कि तुझे आचार्यश्री को मिलने जाना है, परन्तु वो गुजरात के कोई गाँव में है | और इसलिए वहाँ जाने की कोई भी फ्लाइट नहीं है | जोधपुर या अहमदाबाद उतरकर ट्रेन में जाना पड़ेगा और अभी छुट्टी का समय चल रहा है, इस कारण ट्रेन की टिकीट मिलनी मुश्किल है | चालु डब्बे में मैं तुझे कैसे लेकर जाऊ | " मेरे हाई-प्रोफाइल को ध्यान में रखकर पापा बोल रहे थे |

पापा की बात तो उचित थी | परन्तु मेरी आचार्यजी को मिलने की इच्छा गहरी थी |

" पापा, गुरु को मिलने जाए, तो उसमे लकजरी क्या देखनी? जैसा होगा वैसा देखा जाएगा | परन्तु आप टिकीट मंगा ही लो | इस टाइम मैं आचार्यजी को मिले बिना वापस स्वीडन जाने वाला नहीं हूँ | " दृढतापूर्वक पापा को मैंने कह दिया |

मेरी दृढता देखकर पापा ने चेन्नई से अहमदाबाद की टिकीट बुक करा दी |

अहमदाबाद के आगे हमने पकड़ी हुई ट्रेन ठसाठस भरी हुई थी | खड़े रहने की भी जगह नहीं थी | मैंने ट्रेन में बैठे लोगो से रिक्वेस्ट की |

पापा के लिए बैठने की थोड़ी जगह मिल गई | पापा बैठ गए, परन्तु उन्हें मेरी चिंता थी |

" क्या स्वीडन की एक्सप्रेस, बुलेट और कहाँ भारत की चक्काजाम लोकल | "

परन्तु मेरे मुख पर तो प्रसन्नता ही थी | गुरु मुझे आज मिलने वाले थे | मैं जगह न होने के कारण ट्रेन के बाथरूम-संडास के वहाँ जाकर बैठ गया | पापा मुझे देखते रहे |

हम ट्रेन से उतरे | दोपहर के आस पास हमने आचार्य श्री के दर्शन किए | उन्होने बहुत अच्छा आवकार दिया | तब थोड़े busy होने के कारण और हम थक गए होने के कारण आचार्यश्री ने चार बजे आने को कहा |

हम फ्रेश होकर 4 बजे पहुँच गए | आश्चर्य मानो या जो भी मानो इतने बड़े संत ने मुझे 2 घंटे दिए | उनकी सहजता और सरलता देखकर मैं फ़िदा हो गया |

हम जब वापस चेन्नई आ रहे थे, तब पापा ने मुझे sorry कहा | मैंने पापा को sorry कहने को मना किया और मेरे मुँह से शब्द निकल पड़े...

गुरु को मिलने की यदि गहरी चाह हो, तो तुम्हे कोई भी राह रोक नहीं सकती.../

२८ पापा को पुत्र के पास माँगना पड़े, उससे प्रचंड पाप पुत्र के लिए कुछ भी नहीं है...|

" दीपेश ! तु फ्री है अभी ? " भारत से पापा का फोन आया | मैं ऑफिस से घर जा रहा था |

" हाँ ! मैं फ्री ही हूँ | बोलो पापा क्या काम है ? " एकदम विनम्र भाषा से मैंने पूछा |

" दीपेश ! मुझे थोड़े पैसे चाहिए थे | तु वहाँ से मनी ट्रान्सफर कर सकता है ? " पापा ने विनंती की |

" अरे पापा ! उसमे पूछने का क्या है ? सब आपका ही तो है | कितने चाहिए पापा ? आप सिर्फ कहो | मैं अभी-अभी बैंक से ट्रान्सफर करवा देता हूँ | " पापा को मेरे पास माँगना पड़े ये मुझे अच्छा नहीं लगा |

" ठीक है, " कहकर पापा ने फोन रख दिया | मेरे मन में एक निर्णय ने आकार लिया |

छुट्टी के दिनो में मैं भारत पहुँचा |

" पापा ! यहाँ की अच्छी बैंक कौनसी है ? " पापा और मैं नास्ता कर रहे थे और मैंने प्रश्न पूछा |

" क्यों ? बहुत सी है ! " आश्चर्य व्यक्त करते हुए पापा ने कहा |

" मुझे एक नया अकाउंट खोलना है, आप आओगे साथ में? "

पापा ने हाँ कहा | हम कोटक महेंद्रा बैंक में पहुँचे |

“ मुझे एक अकाउंट खोलना है तुम्हारी बैंक में... ” डेस्क पर बैठी हुई महिला को मैंने कहाँ |

“ किस प्रकार का अकाउंट तुम्हे खोलना है ? ” महिला कार्यकर ने पूछा |

“ जिसमे दो साइन चलती हो | ”

मेरा उत्तर सुनकर बैंक वाले को आश्चर्य हुआ |

“ क्यों ? ” बैंकवाले ने पूछा |

“ देखो, ये मेरे पापा है | ” पापा की तरफ अंगुली करते हुए मैंने कहा, “ ये भारत में रहते है और मैं स्वीडन में | उन्हें मेरे पास पैसे माँगने पड़े, ये मुझे अच्छा नहीं लगता | आज जो कुछ भी मैं हूँ इनके कारण हूँ और उन्हें मुझे पूछना पड़ता है | ”

मेरा गला भर आया |

“ बोलो आपकी बैंक मुझे ये फैसिलिटी दे सकती है, तो मैं आपके यहाँ अकाउंट खोलता हूँ | ” मैंने स्पष्टता कर दी |

बैंक वालें ने खुद के मेनेजर को पूछा | मेनेजर ने हाँ कही और मैंने नया अकाउंट खोल दिया | पापा के चेहरे पर एक आश्चर्य, गर्व और संतोष था | बैंक से निकले तब मेरे जीवन का एक बड़ा कर्तव्य पूर्ण करने का संतोष मेरे मन में था | क्योंकि...

पापा को पुत्र के पास माँगना पड़े, उससे प्रचंड पाप पुत्र के लिए कुछ भी नहीं है.../

❷❾ घर वह घर नहीं, साधना का शिख़र होना चाहिए...|

हमारे नए घर का प्रोजेक्ट मुझे पापा बता रहे थे |

“ दीपेश ! ये ग्राउंड फ्लोर गेरेज के लिए है | 2nd फ्लोर में हमारा रूम, 3rd फ्लोर में तुम्हारे दोनों का रूम, इस तरह अभी सोचा है | बराबर है ना ? ” पापा ने मुझे पूछा |

“ हाँ ! आप करो वह सही है, परन्तु ये 1st फ्लोर का क्या करने का सोचा है आपने ? ” मैंने पापा को प्लान में 1st फ्लोर बताते हुए कहा |

“ अभी विचार किया नहीं है | वह खाली ही रखना है, कभी...” बोलते बोलते पापा अटक गए |

“ पापा ! ऐसा क्यों नहीं कर सकते ? ” मैंने एक प्रस्ताव रखते हुए कहा |

“ क्या ? ”

“ कि ये फ्लोर हम उपाश्रय की तरह रख दे ? ” मेरे मन के विचारो को वचनाकार में मैंने रखा | पापा का मुँह दीप्यमान हो गया | उन्हें मेरा विचार अच्छा लगा हो ऐसा मुझे लगा |

“ तेरी बात सच है दीपेश ! पाप की भूमि यदि पवित्र होती हो, तो उसमे ख़राब क्या है ? उल्टा यह तो कितना अच्छा लाभ है ? ” पापा ने मेरी बात में समर्थन का सुर जोड़ा |

“ और पापा हम गार्डन की जगह भी खाली रखेंगे ? ”

“ क्यों ? ” पापा ने पूछा “ वहाँ म.सा. मात्रु परठ सकेंगे | अपना ध्यान न होने के कारण से ही साधु-साध्वीजीओ को संयम में नीचे उतरना पड़ता है | उन्हें जितनी संयम की अनुकूलता देंगे, उतना फायदा हमे होगा, इतनी ज्यादा निर्जरा हमे होगी | ” “ चल नक्की | ये फ्लोर साधु-साध्वीजीओ के लिए रखेंगे | ” पापा ने उल्लास के साथ मंजूरी दी | मेरे मन में अनेरी ख़ुशी थी और ये ख़ुशी में एक ही आकार उभरता था...

घर वह घर नहीं, साधना का शिख़र होना चाहिए.../

इस भाई की आत्मकथा पूरी हो रही है |

प्रश्न: साधु होकर श्रावको के प्रसंग – आत्मकथा देने से क्या फायदा है ? ये भाई तो दीक्षा लेंगे या नहीं ये भी नक्की नहीं है | वे मुमुक्षु भी नहीं है |

तो आखिर किसलिए इस श्रावक का वर्णन करते हो ?

उत्तर: धर्मकल्पद्रुमस्यैता, मूलं मैत्र्यादिभावना : |

यैर्न ज्ञाता न चाभ्यस्ता:, स तेषामतिदुर्लभ: ||

धर्म का मूल

1. मैत्री
2. प्रमोद
3. करुणा
4. माध्यस्थ्य

ये चार भावनाएं है | जिस व्यक्ति में इसका ज्ञान नहीं है और उसका अभ्यास नहीं है, उसे तो धर्म मिलता ही नहीं |

पांडित्य के बीच में भी अभ्यास का महत्व यहाँ बताने में आया है | उत्तराध्ययन में भी **' संजमम्मि अ वीरियं '** कहकर अभ्यास का महत्त्व बताने में आया है | अभ्यास यानी ही आचरण |

ऊपर दी हुई आत्मकथा में दीपेश भाई के जीवन में मैत्र्यादि भावनाओं का अच्छा समन्वय देखने मिलता है | काल के प्रभाव के कारण शायद ये श्रावक साधुओ से भी कुछ बातों में आगे बढ़ जाए ऐसे है | ऐसे चारित्र को पढ़कर हमारे में शुभ भाव प्रगट होते है | और ये गुणों के गान के बाद उसका अभ्यास करने की इच्छा अपने में प्रगटती है | इससे चारित्र रूपी धर्म की विशुद्धि होती है ही |

इसलिए ही यहाँ एक श्रावक की भी आत्मकथा का वर्णन-आलेखन करने में आया है |

शास्त्रों में भी उन –उन श्रावकों का वर्णन आता ही है | ज्ञाताधर्मकथांग उसका ज्वलंत उदाहरण है | वस्तुपाल चरित्र आदि हम पढ़ते ही है और उनके लिखने वाले-सर्जनकार महात्मा ही थे ना ?

इसलिए महोपाध्याय यशोविजयजी के वचन कभी भी भूलना नहीं,

थोडलो पण गुण परतणो, देखी हर्ष मन आण रे.../

ना हिन्दू निकले,
ना मुसलमान निकले,
कब्र खोद कर देखी तो इंसान निकले...|

३१

पापा के कहने से 1½ वर्ष पहले मलरेछा गार्डन में ये भाई हमें मिलने आये | उनकी गुणवत्ता, उनका समर्पण, उनकी निष्पक्षपातिता देखकर हमे बहुत आनंद हुआ |

ये भाई मूल स्थानकवासी है, तो भी उनकी ज्ञान रूचि के हिसाब से सभी म.सा. के पास आते है | उनका स्पष्ट मानना है कि,

" व्यक्ति का मूल्यांकन उनके गुणों से होता है, उनके वेष से नहीं | वेष व्यवहार है, गुण निश्चय है | "

उनके पापा भी अत्यधिक गुणवान पुरुष है | उनमें संयम-संयमी का (सच्चा) राग और विवेक बहुत उच्च कोटि का है |

उसके बाद वे जब भी आते है, तब हमे मिल कर जाते है और स्वीडन तथा खुद के जीवन की अलग-अलग घटनाएँ सुनाते जाते है |

इस टाइम जब वे आये थे, तो हम आराधना भवन में थे | वहाँ उनका छोटा वक्तव्य हमने रखा था | उनके शुरूआत के शब्द...

" मैं बहुत Lucky हूँ | क्यों ? पता है ?

क्योंकि आज मैं सुबह उठा |

रोड पर चलने वाले हर गाडीवालो का मैं उपकार मानता हूँ | क्यों ?

क्योंकि उन्होने मुझे safely यहाँ आने दिया |

जब हम ऐसी बातो का विचार करेंगे, हमें कितना मिला है ये सोचेंगे, तो छोटी – छोटी वस्तुओ का न मिलने का दुःख हमे नहीं रहेगा | ”

उसके बाद उन्होने खुद के जीवन के सभी प्रसंग बताये |

रात को भी वे हमारे पास ज्ञानपिपासा से आते | इतने WELL-EDUCATED और धनिक होते हुए भी वे स्वीडन में खुद की रसोई खुद ही बनाते है और उसमे भी सिर्फ... रोटी-सब्जी |

मिठाई तो वहाँ मिलती ही नहीं है और जब यहाँ से उनकी मम्मी भेजते है तब खाते है | ऐसी तो कितनी ही विशेषताएँ है |

ये गुणवान सब साधु-साध्वीजीओ के पास दौड़कर आते है, क्योंकि उन्हें पता है कि,

ना हिन्दू निकले, ना मुसलमान निकले, कब्र खोद कर देखी तो इंसान निकले.../

|| धन्य जिनशासन ||

|| अहो जिनशासन ||

|| नमोस्तु तस्मै जिनशासनाय ||

_*_